विषय-सूची

अध्याय : १ समत्व योग १-२०

नैतिक साधना का केन्द्रीयतत्त्व समत्व-योग (१); जैन-आचार दर्शन मे समत्व-योग (३); जैन दर्शन मे विषमता (दुःख) का कारण (४), जैन धर्म मे समत्व-योग का महत्त्व (५), जैन धर्म मे समत्व-योग का अर्थ (६), जैन आगमो मे समत्व-योग का निर्देश (७), बौद्ध आचार-दर्शन मे समत्व-योग (७); गीता के आचार दर्शन मे समत्व-योग (९); गीता मे समत्व का अर्थ (१४); गीता में समत्वयोग की शिक्षा (१४); समत्वयोग का व्यवहार पक्ष (१६); समत्वयोग का व्यवहार पक्ष और जैन दृष्टि (१९), समत्वयोग के निष्ठासूत्र (१९); समत्वयोग के क्रियान्वयन के चार सूत्र—वृत्ति मे अनासक्ति (१९); विचार मे अनाग्रह (२०); वैयक्तिक जीवन मे अनाग्रह (२०); सामाजिक आचरण मे अहिंसा (२०)।

अध्याय : २ त्रिविध साधना-मार्ग २१-३६

त्रिविध साधना-मार्ग ही क्यो ? (२१); बौद्ध दर्शन मे त्रिविध साधना-मार्ग (२१); गीता का त्रिविध साधनामार्ग (२२), पाश्चात्य चिन्तन मे त्रिविध साधनापथ (२२), साधन-त्रय का परस्पर सम्बन्ध (२३), सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान का पूर्वापर सम्बन्ध (२३); बौद्ध विचारणा मे ज्ञान और श्रद्धा का सम्बन्ध (२५), गीता मे श्रद्धा और ज्ञान का सम्बन्ध (२५); सम्यग्दर्शन और सम्यक्चारित्र का पूर्वापर सम्बन्ध (२७), बौद्धदर्शन और गीता का दृष्टिकोण (२८); सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की पूर्वापरता (२८); साधन-त्रय मे ज्ञान का स्थान (२९), सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र का पूर्वापर सम्बन्ध भी ऐकान्तिक नही (३०); ज्ञान और क्रिया के सहयोग मे मुक्ति (३१), वैदिक-परम्परा मे ज्ञान और क्रिया के समन्वय मे मुक्ति (३३); बौद्ध-विचारणा मे प्रज्ञा और शील का सम्बन्ध (३३); तुलनात्मक दृष्टि से विचार (३४); मानवीय प्रकृति और त्रिविध साधना-पथ (३५)।

अध्याय : ३ अविद्या (मिथ्यात्व) ३७-४६

मिथ्यात्व का अर्थ (३८); जैन दर्शन मे मिथ्यात्व के प्रकार—एकान्त (३८); विपरीत (३९); वैनयिक (३९), सशय (४०); अज्ञान (४०); मिथ्यात्व के २५ भेद (४०), बौद्ध दर्शन मे मिथ्यात्व के प्रकार (४१); गीता मे अज्ञान (४१); पाश्चात्य दर्शन मे मिथ्यात्व का प्रत्यय—जातिगत मिथ्या धारणाएँ, व्यक्तिगत मिथ्या विश्वास, बाजार मिथ्या विश्वास, रग-मंच की भ्रान्ति (४२), जैन दर्शन मे अविद्या का स्वरूप (४२); बौद्धदर्शन में अविद्या का स्वरूप (४३); बौद्ध दर्शन की अविद्या की समीक्षा (४४); गीता एवं वेदान्त मे अविद्या का स्वरूप (४५), वेदान्त की माया की समीक्षा (४६), उपसहार (४६)।

अध्याय : ४ सम्यग्दर्शन ४७-६९

सम्यक्त्व का अर्थ (४७); दर्शन का अर्थ (४८), सम्यग्दर्शन के विभिन्न अर्थ (४८), जैन आचार दर्शन मे सम्यग्दर्शन का स्थान (५१); बौद्ध दर्शन मे सम्यग्दर्शन का स्थान (५२); वैदिक परम्परा एव गीता मे सम्यग्दर्शन (श्रद्धा) का स्थान (५३), जैनधर्म मे सम्यग्दर्शन का स्वरूप एवं सम्यग्दर्शन के दसभेद (५४-५५), सम्यक्त्व का त्रिविध वर्गीकरण—(अ) कारक सम्यक्त्व, रोचक सम्यक्त्व, दीपक सम्यक्त्व (५५); (ब) औपशमिक सम्यक्त्व, क्षायिक सम्यक्त्व क्षायोपशमिक सम्यक्त्व (५६); सम्यक्त्व का द्विविध वर्गीकरण—(अ) द्रव्य सम्यक्त्व और भाव सम्यक्त्व (५७), (ब) निश्चय सम्यक्त्व और व्यवहार सम्यक्त्व (५७), (स) निसर्गज सम्यक्त्व और अधिगमज सम्यक्त्व (५७), सम्यक्त्व के ५ अग—सम, सवेग, निर्वेद, अनुकम्पा, आस्तिक्य (५८), सम्यक्त्व के दूषण (अतिचार)—शका, आकाक्षा, विचिकित्सा, मिथ्या दृष्टियो की प्रशसा, मिथ्या दृष्टियो का अति परिचय (५९), सम्यग्दर्शन के आठ दर्शनाचार—निश्शकता, निष्काक्षता, निर्विचिकित्सा, अमूढदृष्टि, उपवृहण, स्थिरीकरण, वात्सल्य, प्रभावना, (६०-६४), सम्यग्दर्शन की साधना के छह स्थान (६४), बौद्ध दर्शन में सम्यग्दर्शन का स्वरूप (६४); गीता मे श्रद्धा का स्वरूप एव वर्गीकरण (६६); उपसहार (६८)।

अध्याय : ५ सम्यग्ज्ञान (ज्ञानयोग) ७०-८२

जैन नैतिक साधना मे ज्ञान का स्थान (७०), बौद्ध-दर्शन मे ज्ञान का स्थान (७१); गीता में ज्ञान का स्थान (७१); सम्यग्ज्ञान का स्वरूप (७१); ज्ञान

के स्तर (७२); बौद्धिक ज्ञान (७३); आध्यात्मिक ज्ञान (७४); नैतिक जीवन का लक्ष्य आत्मज्ञान (७५); आत्मज्ञान की समस्या (७६); आत्मज्ञान की प्राथमिक विधि भेदविज्ञान (७७); जैन दर्शन मे भेद विज्ञान (७८); बौद्ध-दर्शन में भेदाभ्यास (७८); गीता मे आत्म-अनात्म विवेक (भेद-विज्ञान) (८०); निष्कर्ष (८२)।

अध्याय : ६ सम्यक् चारित्र (शील) ८३-९५

सम्यग्दर्शन मे सम्यक्चारित्र की ओर (८३); सम्यक्चारित्र का स्वरूप (८४); चारित्र के दो रूप, (८५); निश्चय दृष्टि मे चारित्र (८५); व्यवहारचारित्र (८५); व्यवहारचारित्र के प्रकार (८६); चारित्र का चतुर्विध वर्गीकरण (८६); चारित्र का पंचविध वर्गीकरण—सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीयचारित्र, परिहारविशुद्धि चारित्र, सूक्ष्मसम्पराय चारित्र, यथाख्यात चारित्र (८७); चारित्र का त्रिविध वर्गीकरण (८७); बौद्ध दर्शन और सम्यक्चारित्र (८७); शील का अर्थ (८८); शील के प्रकार—द्विविधवर्गीकरण (८८); त्रिविध वर्गीकरण (८९); शील का प्रत्युपस्थान (९०); शील का पदस्थान (९०); शील के गुण (९०); अष्टांग साधनापथ और शील (९१); वैदिक परम्परा मे शील या सदाचार (९२); शील (९२); सामयाचारिक (९२); शिष्टाचार (९३); सदाचार (९३); उपसंहार (९४)।

अध्याय : ७ सम्यक् तप तथा योग-मार्ग (९६-११०)

नैतिक जीवन एवं तप (९६); जैन साधना-पद्धति मे तप का स्थान (९८); हिन्दू साधना-पद्धति मे तप का स्थान (९९); बौद्ध साधना-पद्धति मे तप का स्थान (९९); तप के स्वरूप का विकास (१०१); जैन-साधना मे तप का प्रयोजन (१०२); वैदिक साधना मे तप का प्रयोजन (१०३); बौद्ध साधना में तप का प्रयोजन (१०३); जैन साधना मे तप का वर्गीकरण (१०४); शारीरिक या बाह्य तप के भेद—अनशन, ऊनोदरी, रस परित्याग, भिक्षाचर्या, कायक्लेश, संलीनता (१०४-१०५); आध्यान्तर तप के भेद—प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग, ध्यान–धर्मध्यान, शुक्लध्यान, (१०५-१०८); गीता में तप का वर्गीकरण(१०९); बौद्ध साधना मे तप का वर्गीकरण (११०); अष्टांग योग और जैनदर्शन (११२); तप का सामान्य स्वरूप : एक मूल्यांकन (११४)।

अध्याय : ८ निवृत्तिमार्ग और प्रवृत्तिमार्ग १२०-१४२

निवृत्ति मार्ग एवं प्रवृत्ति मार्ग का विकास (१२०); निवृत्ति-प्रवृत्ति के विभिन्न अर्थ–(१२०); प्रवृत्ति और निवृत्ति सक्रियता एवं निष्क्रियता के अर्थ मे जैनदृष्टिकोण (१२१); बौद्ध दृष्टिकोण (१२२); गीता का दृष्टिकोण (१२२); गृहस्थ धर्म बनाम संन्यास धर्म–जैन और बौद्ध दृष्टिकोण (१२३); संन्यास मार्ग पर अधिक बल (१२४); जैन और बौद्ध दर्शन मे संन्यास निरापद मार्ग (१२४), क्या सन्यास पलायन है ? (१२५); गृहस्थ और संन्यास जीवन की श्रेष्ठता ? (१२६); गीता का दृष्टिकाण,–शकर का संन्यासमार्गीय दृष्टिकोण (१२८); तिलक का कर्ममार्गीय दृष्टिकोण (१२८); गीता का दृष्टिकोण समन्वयात्मक (१२९); निष्कर्ष (१३०); भोगवाद बनाम वैराग्यवाद (१३१);–जैन दृष्टिकोण (१३२); बौद्ध दृष्टिकोण (१३४); गीता का दृष्टिकोण (१३५); विधेयात्मक बनाम निषेधात्मक नैतिकता (१३५);–जैन दृष्टिकोण (१३५ ; बौद्ध दृष्टिकोण (१३७); गीता का दृष्टिकोण (१३७); व्यक्तिपरक बनाम समाजपरक नीतिशास्त्र (१३७); प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों आवश्यक (१३९); दोनो की सीमाएँ एवं क्षेत्र (१४०);–जैन दृष्टिकोण (१४०); बौद्ध दृष्टिकोण (१४१); गीता का दृष्टिकोण (१४१); उपसहार (१४१)।